ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 4 | DECEMBER - 2017

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

कुंवर चैनसिंह प्रथम स्वतंत्रता सेनानी, नरसिहंगढ़

डॉ. श्रीमती ममता वर्मा

शोध सारांश :–

कुंवर चैनसिंह महाराज सौभागसिंह के पुत्र थे। वह बड़े ही होनहार प्रकृति के थे। उनमें देशप्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। अंग्रेजों द्वारा राज्य में हस्तक्षेप उन्हें बिल्कुल पसंद नही था। उनके राज्य के दीवान आनन्दराम बख्शी एवं रूपराम वौरा नरसिंहगढ़ राज्य की खबरे अंग्रेजों को देते थे। इस बात की खबर जब कुंवर चैनसिंह को लगी तो उन्होंने दोनो को मौत के घाट उतार दिया।

सीहोर छावनी का प्रमुख मैडाक था। मैडाक तथा कुंवर चैनसिंह के मध्य 24 जुलाई, 1824 को भीषण युध्द हुआ। इस युध्द में कुंवर चैनसिंह वीरगति को प्राप्त हुए।

सीहोर तथा नरसिंहगढ़ में कुंवर चैनसिंह की भव्य छतरियां बनी हुई है। यहां के निवासी प्रति शनिवार उनकी पूजा करते है। देश एवं राज्य के लिए उनके द्वारा दिया गया बलिदान हमेशा हमारा प्रेरणा स्त्रोत रहेगा।

शब्द संकेत :– मातृभूमि एवं देशप्रेम, सीहोर छावनी, खूखरी।

प्रस्तावना :–

अंग्रेजों ने भारत पर कई वर्षो तक शासन किया। शासन करने के लिए उन्होंने कूटनीति एवं षड़यंत्र का सहारा लिया। उन्होंने नरसिंहगढ़ राज्य पर भी षड़यंत्र द्वारा अधिकार करने का प्रयास किया परन्तु वह सफल नही हुए। नरसिंहगढ़ राज्य में एक ऐसे वीर सपूत का जन्म हुआ जिन्होंने अपने राज्य की सार्वभौमिकता के लिए अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार नही की। कुंवर चैनसिंह प्रथम स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने अंग्रेजों से बराबरी से युद्ध किया एवं अपने राज्य का कीर्तिमान स्थापित किया।

कुंवर चैनसिंह :–

कुंवर चैनसिंह महाराज सौभागसिंह (1805 ई. से 1827 ई.) के पुत्र थे। कुंवर चैनसिंह बचपन से होनहार प्रकृति के रहे। अस्त्र–शस्त्र संचालन व घुड़सवारी उनको पंसद थी । राज्य की आन्तरिक व बाहरी राजनैतिक घटनाओं को जानने में उनकी गहरी रूचि थी । बचपन से ही कुंवर चैनसिंह जी में संघर्ष व स्वाभिमान की भावना थी तथा अंग्रेजी सेना का हस्तक्षेप राज्य में हो बर्दाश्त नहीं करते थे।[1] कुंवर चैनसिंह में मातृभूमि एवं देशप्रम की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी।[2]

राजनीतिक जीवन :–

अंग्रेजों ने कूटनीति चाल चलकर नरसिंहगढ़ रियासत पर कब्जा करने का प्रयास किया। राज्य के तत्कालीन महामंत्री आनंदराम बख्शी को प्रलोभन देकर अंग्रेज सेनापति ने अपनी ओर मिला लिया। उसने नरसिंहगढ़ राज्य परिवार की गुप्त जानकारी एकत्रित करना प्रारम्भ कर दी। सन् 1819 ई. में अंग्रेजी फौज मालवा में आई। होल्कर स्टेट के राजा मल्हारराव को घेर लिया। दोनो के मध्य सीतामऊ की पहाड़ी पर युद्ध हुआ। मल्हारराव की फौज तितर–बितर हो गई तथा मल्हारराव की रानी को अंग्रेजी सवारों ने बन्दी बना लिया। उन्हें पकड़कर ले जा रहे थे। यह खबर कुंवर चैनसिंह को मिली उन्होंने कुछ साथियों को लेकर अंग्रेजी सवारों

को घेर लिया। कुंवर चैनसिंह जी की तलवार के वार के सामने अंग्रेजी सवार टिक नहीं पाये और भाग गये एवं रानी को ससम्मान मल्हारराव होल्कर के पास पहुंचाया।[3] दीवान आनन्दराम बख्शी नरसिहंगढ़ राजपरिवार की गुप्त जानकारियां मैडाक को देने लगा। कुंवर चैनसिंह को इस विश्वासघात की जानकारी मिलते ही, उन्होंने आनन्दराम बख्शी को मौत के घाट उतार दिया।[4]

सीहोर छावनी युद्ध का कारण :–

नरसिंहगढ़ सैन्य दल में कुछ चापलूस, अवसरवादी तथा अंग्रेजों के जासूस थे। ऐसे में रूपराम वौरा भी था जो नरसिंहगढ़ रियासत के पतन के लिए अंग्रेजों तथा होल्करों से मिलकर गहरी खाई खोद रहा था। रूपराम वौरा की नकारात्मक एवं देशद्रोही गतिविधियॉ बढ़ने पर कुंवर चैनसिंह ने उसे रास्ते से हटाने के लिए योजना तैयार कर रूपराम वौरा का कत्ल करा दिया।[5] रूपराम के भाई ने चैनसिंह द्वारा अपने भाई को मार डालने की शिकायत कलकत्ता स्थित गवर्नर जनरल और सीहोर में मैडाक के पास दर्ज कराई।[6]

सन् 1818 ई. में अंग्रेजों ने सीहोर में अपनी छावनी स्थापित की एवं मिस्टर मैडाक को प्रथम राजनीतिक प्रतिनिधि के रूप में सीहोर भेजा। भोपाल राज्य के साथ ही नरसिंहगढ़, खिलचीपुर और राजगढ़ की रियासतों से संबंधित राजनैतिक अधिकार भी मैडाक को सौप दिए।[7]

कुंवर चैनसिंह एक कुशल सेनानायक थे। उनमें अद्भुत संगठन शक्ति थी। अतः वातावरण को भांपते हुए उन्होंने चुपचाप सैन्य संगठन बनाना शुरू किया। सैनिक दस्तों में हिन्दु, मुस्लिम, मराठे, गौड़, एवं राजपूत जागीरदार, रणबांकुरे शामिल थे।[8]

कुंवर चैनसिंह जी युद्ध करते हुए

मैडाक ने एक शिविर बैरसिया में लगाया व कुंवर चैनसिंह को मिलने के लिए बुलाया। कुंवर चैनसिंह अपने साथी हिम्मतखां, बहादुर खां, हनुमंत सिंह, ठाकुर गुलाब सिंह, ठाकुर शिव सिंह, ठाकुर मौकमसिंह के साथ बैरसिया कैम्प मिलने पहुॅचे।[9] लोकश्रुति के अनुसार मैडाक ने कुंवर चैनसिंह के सामने तीन शर्तें रखी। पहली, वह हमेशा के लिए नरसिंहगढ़ छोड़कर काशी निवास करें। दूसरी, तीन वर्षो तक नरसिंहगढ़ राज्य अंग्रेजों के अधीन कार्य करें और तीसरी शर्त थी, नरसिंहगढ़ क्षेंत्र में होने वाली अफीम की खरीद सिर्फ अंग्रेज ही करें। मेडाक ने यह कहा कि यदि ये शर्तें नही मानी तो कुंवर चैनसिंह के खिलाफ दो मंत्रियों की हत्या का मुकदमा चलेगा। कुंवर चैनसिंह ने शर्तें नही मानी तथा मैडाक ने उन्हें 24 जून, 1824 ई. को सीहोर आने को कहा।[10]

कुंवर चैनसिंह अपने दल सहित सातनवाड़ी, खोखरा, शुजालपुर से पार्वती नदी पार कर सीहोर पहुॅचे। कुंवर चैनसिंह अपने विश्वासपात्र अंगरक्षक हिम्मत खां व बहादुर खां के साथ मैडाक से मिलने पहुॅचे।[11] मैडाक ने कुंवर चैनसिंह को निहत्था कर बन्दी बनाने अथवा मार डालने के उद्देश्य से कुंवर चैनसिंह से दोनों तलवारे मांगी, कुंवर चैनसिंह ने दूसरी तलवार यह कहकर नही दी कि राजपूत की कमर शस्त्र से खाली नही रहती है। इसी बात पर तकरार बढ़ गई और मैडाक द्वारा अपनी फौज को कुंवर चैनसिंह को बन्दी बनाने का आदेश देते ही, कुंवर चैनसिंह ने मैडाक पर हमला बोल दिया। सीहोर के वर्तमान तहसील चौराहे पर कुंवर चैनसिंह के साथियों और अंग्रेजों के बीच भीषण युद्ध हुआ।[12]

युद्ध का परिणाम :–

कुंवर चैनसिंह के सैनिक संख्या में कम थे वही दूसरी ओर अंग्रेजी सेना अधिक थी। कुंवर चैनसिंह ने बड़ी वीरता के साथ अंग्रेजों का सामना किया। अचानक एक गोली कुंवर चैनसिंह के सीने में लगी व तलवार की चोट सिर में लगी। हिम्मत खां तथा बहादुर खां कुंवर चैनसिंह को अंग्रेजों से बचाते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।[13] सुबेदार कन्हैयासिंह ने घायल कुंवर चैनसिंह पर आक्रमण किया सूबेदार की गद्दारी पर उनका खून खोल उठा और खूखरी से कन्हैयासिंह के दो टुकड़े कर दिये। दूसरे ही पल सूबेदार कन्हैयासिंह के सिपाहियों ने कुंवर चैनसिंह पर एक साथ हमला किया जिससे दिनांक 24 जुलाई, 1824 ई. को सीहोर में वीरगति को प्राप्त हुए।[14]

युद्ध की समाप्ति पश्चात् संध्या के समय किले के फतेहसिंह जी, राजगढ़ दीवान शंकरलाल जी और नरसिंहगढ़ के कुछ जागीरदारों ने अमरवीर शहीद राजकुमार चैनसिंह जी का भोपाल नवाब शाहजहां बैगम द्वारा 75 बीघा प्रदत्त भूमि (सीहोर) पर अग्नि संस्कार किया।[15]

कुंवर चैनसिंह जी की छतरी सीहोर

सीहोर के दशहरा बाग मैदान में कुंवर चैनसिंह की छतरी के साथ ही उनके साथी हिम्मतखां, बहादुर खां एवं शेरू की कब्रे बनी हुई है।[16] सीहोर से फूल लाकर नरसिंहगढ़ छारबाग में दाह किये और यहॉ भी एक भव्य छतरी बनाई गई है, जिसमें हर शनिवार को पूजा होती है।[17] सीहोर तथा नरसिंहगढ़ के लोग कुंवर चैनसिंह की पूजा अर्चना करते है तथा मन्नतें मांगकर अपने श्रृद्धासुमन अर्पित करते है।[18]

वर्तमान में प्रतिवर्ष 24 जुलाई को कुंवर चैनसिंह स्मृति समारोह कार्यक्रम कुंवर जितेन्द्र पंवार उनकी पुण्य तिथि पर आयोजित करते आ रहे है।[19] महाराज राज्यवर्धन सिंह जी के प्रयास से प्रथम बार कुंवर चैनसिंह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का राजकीय सम्मान प्राप्त हुआ तथा 24 जुलाई, 2013 को सीहोर में 11 बन्दूकों की सलामी दी गई।[20]

निष्कर्ष :–

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट होता हैं कि कुंवर चैनसिंह जी एक शुरवीर एवं पराक्रमी स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने अपने देश एवं राज्य के सम्मान की खातिर अंग्रेजों की अधिनता स्वीकार न करते हुए अंग्रेजों के विरूध युद्ध किया एवं वीरगति को प्राप्त हुए। कालान्तर में सभी के लिए प्रेरणा स्त्रोत एवं पूज्यनीय बने।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. श्री बंशीधर गुप्ता, उत्तरार्द्ध स्मारिका, मध्यप्रदेश पेन्शनर्स एसोसिऐशन शाखा, नरसिंहगढ़, 2012–13, पृष्ठ–24

2. डॉ. सूर्यनारायण प्रलयंकर, सूर्यांश –3 अमरगाथा, कुंवर चैनसिंह जी प्रथम स्वतंत्रता सेनानी, नरसिंहगढ़, जबलपुर, 2007 पृष्ठ–8
3. उत्तरार्द्ध स्मारिका, पृष्ठ–24
4. रामजी श्रीवास्तव, वंदन (म.प्र. में स्वतंत्रता संग्राम तथा सेनानियों का परिचय), भोपाल, 2000, पृष्ठ–7
5. सूर्यांश –3 अमरगाथा, पृष्ठ–9
6. वन्दन, पृष्ठ–7
7. सुधीर सक्सेना, म.प्र. में आजादी की लड़ाई और आदिवासी, भोपाल, 2007, पृष्ठ–56
8. सूर्यांश –3 अमरगाथा, पृष्ठ–9
9. उत्तरार्द्ध स्मारिका, पृष्ठ –24
10. एम. जी. खिरवड़कर, म.प्र. सन्देश 15 अगस्त, 1987, स्वाधीनता आन्दोलन विशेषांक, भोपाल, 1987 पृष्ठ–40
11. उत्तरार्द्ध स्मारिका, पृष्ठ–24
12. वन्दन, पृष्ठ–7, 8
13. उत्तरार्द्ध स्मारिका, पृष्ठ–25
14. सूर्यांश –3 अमरगाथा, पृष्ठ–10
15. वही, पृष्ठ –30
16. मध्यप्रदेश सन्देश, पृष्ठ –40
17. डॉ. सूर्यनारायण प्रलयंकर, स्वतंत्रता संग्राम इतिहास, जिला राजगढ़, ब्यावरा, 1986, पृष्ठ –19
18. मध्यप्रदेश सन्देश , पृष्ठ– 40
19. उत्तरार्द्ध स्मारिका, पृष्ठ –25
20 नरसिंहगढ़ स्टेट के वर्तमान कुंवर वीर विक्रमसिंह जी का व्यक्तिगत साक्षात्कार, 21.04.2014